तसर रेशम कृषक — सफलता की कहानी

आदिवासी बाहुल्य जिला बस्तर के मुख्यालय जगदलपुर के उत्तर में बस्तर ग्राम से 4.0 कि.मी. की दूरी पर स्थित है मधोता ग्राम जो राजा के शासन काल में कभी बस्तर की राजधानी के नाम से जाना जाता था। इस ग्राम में 22 पारा हैं तथा लगभग 500 हेक्टेयर क्षेत्र में जंगल हैं जहाँ अर्जुन तथा आसन के वृक्ष बहुतायत में हैं। क्षेत्र में मुख्यत: आदिवासी समाज के लोगों जनसंख्या सर्वाधिक है जो खेती किसानी के साथ-साथ वनों में तसर कीटपालन का कार्य समूहों में करते है। इन्हीं में मुण्डकुटियापारा के **श्री सुकदेव मण्डावी** हैं जो वर्ष 2002 से तसर कोसा कीटपालन का कार्य पारंपरिक विधि से कर रहे थे जिससे तसर कोसा का उत्पादन 20-25 कोसा प्रति रोग मुक्त चकत्ता (dfl) ही हो पाता था। फलस्वरूप कार्य करने के हिसाब से आय नहीं हो पाती थी।

क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, जगदलपुर द्वारा श्री सुकदेव मण्डावी को विभाग के द्वारा दिये जाने वाले एकीकृत कौशल विकास योजनान्तर्गत चयन कर वर्ष 2014 में तसर कीटपालन प्रौद्योगिकी जैसे प्रक्षेत्र में पत्तियों की गुणवत्ता वृद्धि हेतु यूरिया स्प्रे करना, गॉल की रोकथाम हेतु रोगर का छिडकाव, चाकी कीटपालन, विसंक्रमण तकनीकी तथा तसर रेशमकीट को रोगों से बचाव के उपाय इत्यादि पर 15 दिनों का आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। तदुपरान्त श्री सुकदेव मण्डावी ने प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी के अनुरूप कीटपालन प्रारंभ किया जिससे हुई आय से वे काफी संतुष्ट हुए।

श्री सुकदेव मण्डावी

विगत तीन वर्षों में श्री सुकदेव मण्डावी द्वारा किए गए कीटपालन के आँकडे निम्नवत है।

वर्ष	फसल	पालित रो.मु.च.	कुल कोसा उत्पादन	कोसा उत्पादन/ रो.मु.च.	कुल आय	कुल आय प्रतिदिन
2014	I	200	8874	44	8864	295
	II	200	8292	41	6967	155
	कुल/औसत	**400**	**17166**	**43**	**15831**	**225**
2015	I	200	7310	37	7819	261
	II	200	9248	46	10631	236
	कुल/औसत	**400**	**16558**	**41**	**18450**	**248**
2016	I	200	9437	47	11400	380
	II	200	5390	27	7179	160
	कुल/औसत	**400**	**14827**	**37**	**18579**	**270**

श्री सुकदेव मण्डावी ने बताया कि वह दसवीं कक्षा उत्तीर्ण है तथा गरीब परिस्थिति के कारण आगे की शिक्षा जारी नहीं रख सका। घर में सिर्फ माता पिता हैं तथा 2.0 एकड़ का खेत है जिसमें सिर्फ धान की एक फसल लेता है। धान का उपयोग सिर्फ घर के उपयोग के लिए होता है तथा कीटपालन से हुई आय से अन्य खर्च चलाने में मदद मिल जाती है।

श्री सुकदेव मण्डावी तसर रेशम कीटपालन से हुई आय से संतुष्ट है क्योंकि उसे उसके गॉव में ही स्वरोजगार प्राप्त हो रहा है तथा कृषि कार्य के साथ-साथ तसर रेशम कीटपालन से अतिरिक्त आय हो रही है। वह अपने अन्य सथियो को भी रोजगार प्राप्त करने हेतु पलायन न कर तसर कीटपालन अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है।

****